मूल्य रु. ५-००

मासिक

श्री स्वामिनारायण

सलंग अंक १०७ • मार्च-२०१६
प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख

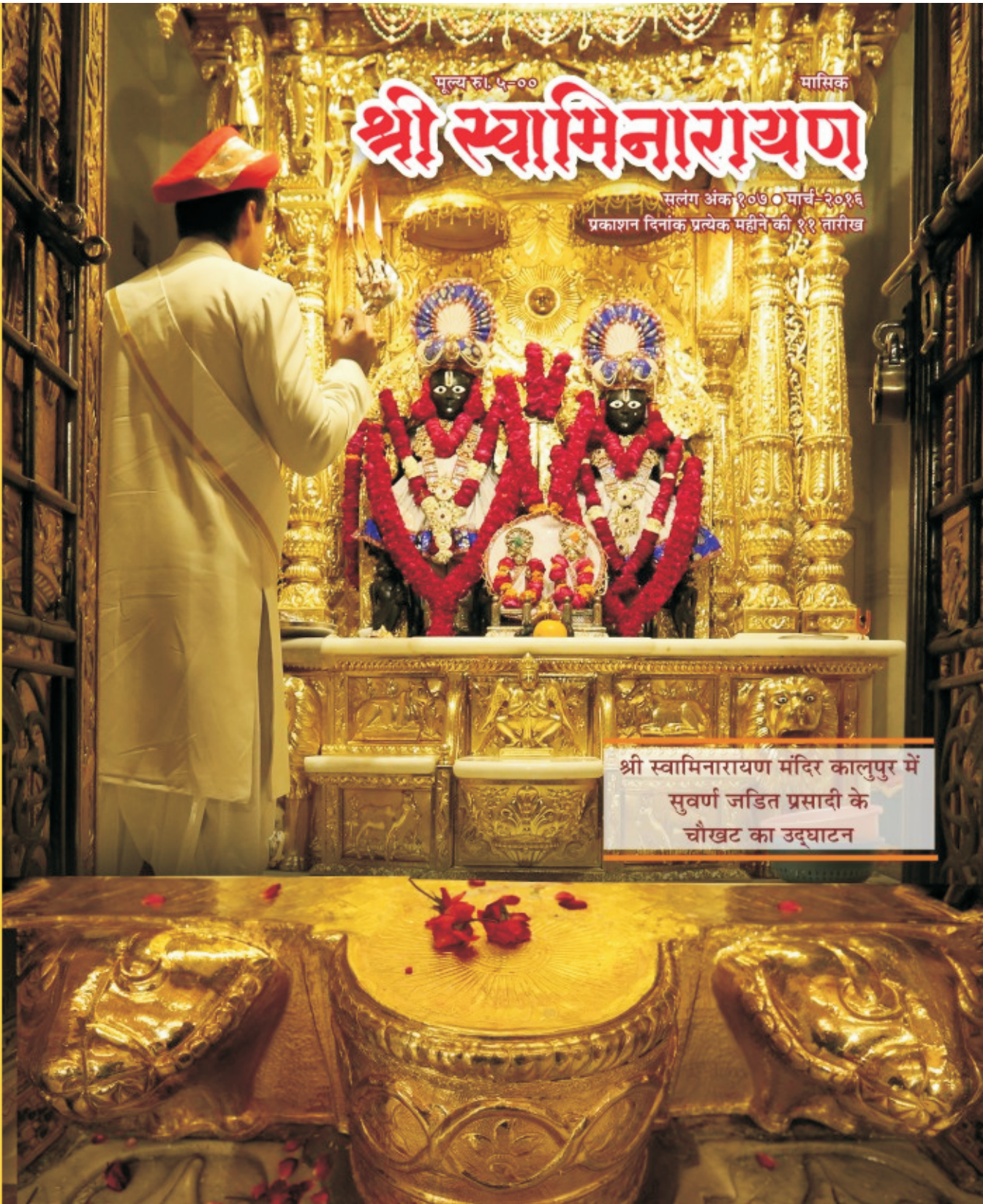

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में
सुवर्ण जडित प्रसादी के
चौखट का उद्घाटन

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

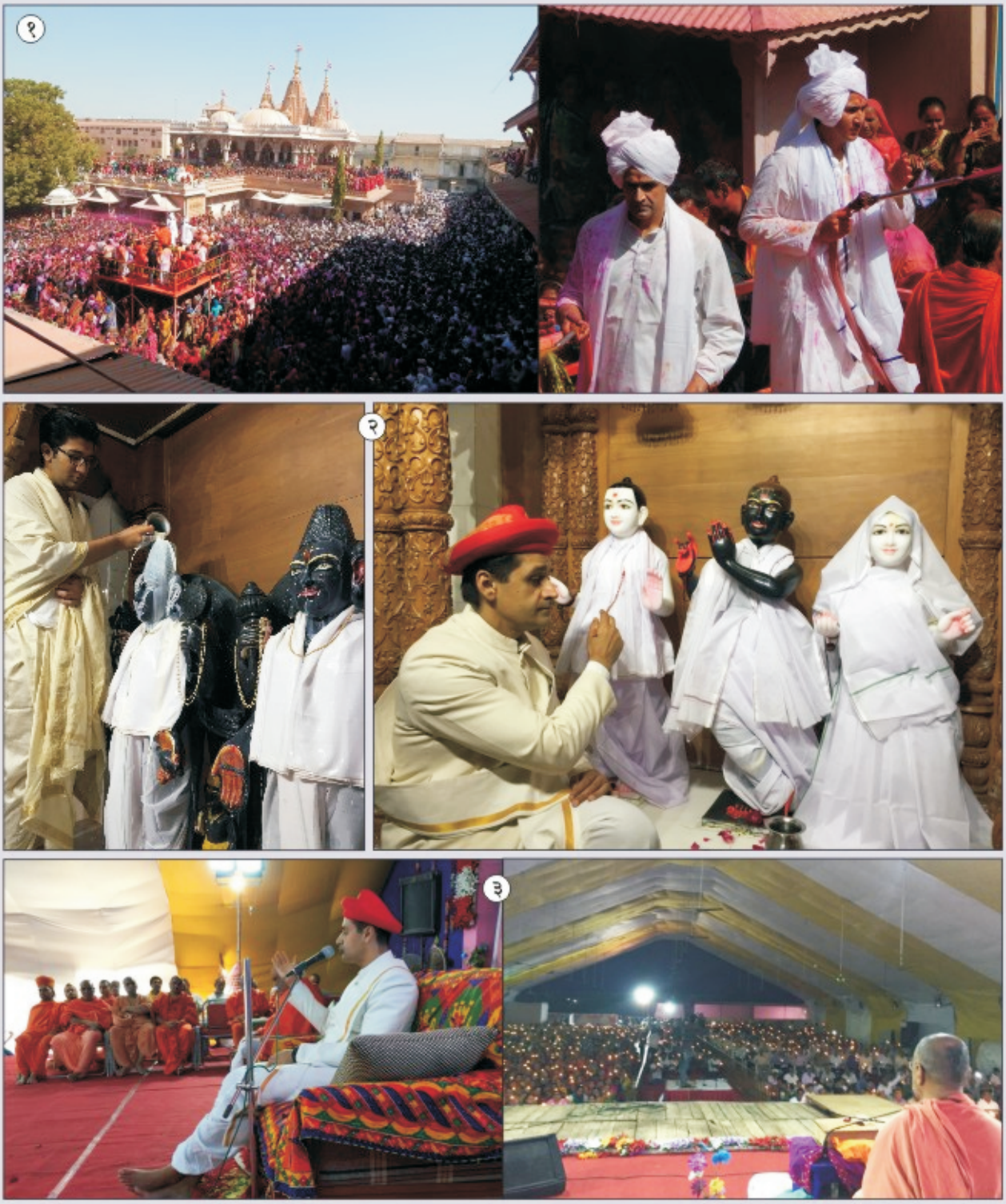

(१) वसंत पंचमी को श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली में हजारो संत-हरिभक्तों के साथ रंगोत्सव करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री ।(२) अंजलि मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग में ठाकुरजी का अभिषेक करते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री तथा अंगन्यासविधिकरते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।(३) श्री स्वामिनारायण मंदिर कुबड़थल के दशाब्दी महोत्सव की सभा में आशीर्वचन देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा कथा पारायण का पान कराते हुए स.गु.शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी - जेतलपुर ।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ९ ● अंक : १०७

मार्च-२०१६

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	मूर्ति	०६
०४.	कृष्ण सेवा मुक्तिश्च गम्यताम्	०९
०५.	शिक्षापत्री के पालन से वसंत की अनुभूति	११
०६.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१३
०७.	सत्संग बालवाटिका	१५
०८.	भक्ति सुधा	१७
०९.	सत्संग समाचार	२१

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अस्मदीयम्

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवानने इस जीव के कल्याण तथा मोक्ष के लिये अपने संप्रदाय में उत्सवों की परंपरा प्रवर्तित की है। देश-विदेश के अपने हरि मंदिरो से लेकर शिखरी मंदिरो तक सतत उत्सव होता रहता है। जिस में मूर्ति प्रतिष्ठा, पाटोत्सव, पंचम दशाब्दी, रजत-सुवर्ण जयन्ती, शताब्दी, शतामृत, द्विशताब्दी इस तरह अनेकों मंदिरो में समय समय पर उत्सव होते रहते हैं।

उत्सवों का मूल उद्देश एक मात्र जीव चाहे जैसा हो वह ऐसे उत्सव में जाकर दर्शन करके कथा श्रवण किया होगा और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के मुख से दो शब्द आशीर्वाद कर्ण विवर से सुना होगा तो ही अंत समय में उपरोक्त विचार मन में याद आयेगा, यदि याद आजायेगा तो निश्चित ही भगवान श्रीहरि का स्मरण हो जायेगा। इससे उसके जीव का कल्याण हो जायेगा।

अभी-अभी कितने उत्सव संपन्न हो गये। कितने नूतन मंदिरो में मूर्ति प्रतिष्ठा हुई जिसमें लीलापुर (मूलीदेश), वक्तापुर, दियोदर, मोडासा, धनसुरा (बनासकांठा) मूली मंदिर का रंगोत्सव, अंजली मंदिर, पाटडी मंदिर, नारणपुरा मंदिर, टोरडा मंदिर, नारायणघाट मंदिर इसके अलांवा कालुपुर श्री स्वामिनारायण में श्री नरनारायणदेव का १९४ वा पाटोत्सव, श्री स्वामिनारायण म्युजियम का पांचवा स्थापना दिन धूमधाम से मनाया गया था। ऐसे उत्सवों में यजमान बनकर लाभ लेना बड़ा उत्तम है, लेकिन इससे भी अधिक महोत्सव में स्वयं सेवक बनकर जैसी भी सेवा मिले वह सेवा करना अति उत्तम है। ''नीची टेल मले तो माने मोटा भाग्य जो'' इस तरह छोटी से छोटी सेवा जैसे-संत-हरिभक्तों के भोजन का पत्तल उठाना, भोजन की थाली-कटोरी-उठाना साफ करना, उत्सव के स्थल की सफाई, मैदान की सफाई करना, यह सभी सेवा श्रेष्ठ बताई गयी है।

इसलिये प्रिय भक्तों ! हमें जो भी सेवा मिले उसे छोटी सेवा नहीं समझनी चाहिए। श्रद्धा पूर्वक उसे स्वीकार करके भक्ति भाव पूर्वक प्रेम से सेवा करलेनी चाहिए। अपने भगवान परम कृपालु सर्वावतारी श्रीजी महाराज हम सभी के ऊपर खूब प्रसन्न होंगे तथा धर्मकुल प्रसन्न होकर अन्तःकरण से आशीर्वाद देंगे।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की

रुपरेखा

फरवरी-२०१६)

श्री स्वामिनारायण

१ श्री स्वामिनारायण मंदिर लालोडा (ईडर) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२ निकोल पदार्पण।

३ श्री स्वामिनारायण मंदिर लीलापुर (मूलीदेश) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

६ बालवा गाँव में पदार्पण।

७ श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (सेक्टर-२) पदार्पण।

९ श्री स्वामिनारायण मंदिर वक्तापुर (प्रांतीज) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

१२ श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली वसंत पंचमी के पाटोत्सव प्रसंग पर (रंगोत्सव प्रसंग पर) पदार्पण।

१३ श्री स्वामिनारायण मंदिर उवारसद कथा प्रसंग पर पदार्पण।

१५ श्री स्वामिनारायण मंदिर टोरडा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१६ श्री स्वामिनारायण मंदिर धनसुरा मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

१७ श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा, बारेजा तथा सरसपुर मंदिर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण। सायंकाल अंजली वासणा मंदिर कथा प्रसंग पर पदार्पण।

१९ श्री स्वामिनारायण मंदिर राउता (राजस्थान) पदार्पण।

२० श्री स्वामिनारायण मंदिर भीमपुरा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२१ श्री स्वामिनारायण मंदिर अंजली पाटोत्सव प्रसंग पर दोपहर में - मुंबई थाना सत्संग सभा प्रसंग पर पदार्पण।

२२ श्री स्वामिनारायण मंदिर मोखासण पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२३ श्री स्वामिनारायण मंदिर माधवगढ पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२४ श्री स्वामिनारायण मंदिर महेसाणा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२५ ऊँझा श्री स्वामिनारायण मंदिर खात मुहूर्त प्रसंग पर पदार्पण।

२६-२७ श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट दशाब्दी पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२७-२८ रात्रि में मुंबई श्री स्वामिनारायण मंदिर विश्रांतिभवन (भुज-कच्छ मंदिर संचालित) पाटोत्सव प्रसंग पर विले-पार्ले पदार्पण।

२९ श्री स्वामिनारायण मंदिर मोरबी पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

मूर्ति

– साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

श्रीमद् भागवत महापुराण के दूसरे स्कन्धके १६ वें अध्याय में पृथ्वी देवी ने धर्म से कहा कि भगवान के स्वरुप में उन्चालिस गुण – सत्य, पवित्रता, दया, क्षमा, त्याग, संतोष, सरलता, शम, दम, तप, समता, तितिक्षा, उपरति, शास्त्र विचार, ज्ञान, वैराग्य, ऐश्वर्य, वीरता, तेज, बल, स्मृति, स्वतंत्रता, कौशल, क्रांति, धैर्य, कोमलता, निर्भोकता, विनय, शील, साहस, उत्साह, बल, सौभाग्य, गंभीरता, स्थिरता, आस्तिकता, कीर्ति–गौरव, निरहंकारपना, ये सभी नित्य निरन्तर निवास करते हैं। एक क्षण के लिये भी वे अलग नहीं होते । कलिकालने धर्म के तीन चरण को भी खंडित कर दिया है। इसलिये धर्म के सद्गुण भगवान की मूर्ति के आधार पर टिके हुए हैं। तथा धर्म भी भगवान की मूर्ति के आधार पर टिके हुए हैं। इस के साथ ही जो भगवान की मूर्ति को आधार बनाकर निष्ठा रखते हैं तथा भगवान के स्वरुप को हृदय में धारण करते हैं उनके हृदय में धर्म का निवास रहता है। गढडा मध्य के १५ वें वचनामृत में श्रीजी महाराज ने इस प्रसंग को कहा है।

भगवान की मूर्ति चिंतामणी के समान है । जो व्यक्ति जिस पदार्थ की कामना करता है वह उसे मिल जाती है।(ग.म. १)

जिन्हे भगवान के स्वरुप की प्राप्ति नहीं हुई है, उनकी मति में ऐसा होता है कि मैं अज्ञानी हूँ, मेरा कल्याण नहीं होगा।(ग.प्र. १४)

भगवान का भक्त हो तो वह खाते, पीते, नहाते, धोते, चलते, बैठते, इन सभी क्रियाओं को करते हुए भी भगवान के स्वरुप का सदा ध्यान का अभ्यास करना चाहिए।(ग.प्र. २२)

चलते – फिरते – खाते – पीते उठते बैठते अपनी सभी क्रियाओं में भगवान का चिन्तन करते रहना चाहिए।(ग.प्र. २१)

अपने स्वरुप के विषय में भगवान की मूर्ति का ध्यान करते हुए भजन करे।(ग.प्र. २३)

भगवान की मूर्ति को अन्तर में धारण करके उन्हीं के सामने देखते हुए ऐसा करने से अन्तर्दृष्टि प्राप्ति होती है । परमेश्वर अपनी आज्ञा से जो मूर्ति पूजा में दी हो वह मूर्ति ९ प्रकार की कही गई है उन सभी में परमात्मा साक्षात् विराजमान रहते हैं।(ग.प्र. ६८)

गोपांगनाओं का भगवान के प्रति भागवत में वचन है कि, हे भगवन् ? जिसदिन से आपके चरणों का स्पर्श हुआ है उस दिन से आप के विना संसार के सभी सुख विष जैसे लगने लगे हैं।(सा. ५)

वह भक्त भगवान की आज्ञानुसार जहाँ जाय वहाँ – वहाँ भगवान की मूर्ति भी साथ लेकर जाय । जिस तरह भक्त भगवान के विना नही रह सकता उसी तरह भगवान भी भक्त के विना नही रह सकते। वह परमात्मा के स्वरुप का ध्यान करके परमेश्वर के वचन को हृदय में धारण करके शरीर को एकदम सुखा दे, शरीर खोखा

जैसी हो जाय । (का. १२)

भगवान अपनी मूर्ति को जहाँ जिस रुप में दिखाना चाहे वहाँ उस स्वरुप का दर्शन कराते हैं । इसी तरह जहाँ जितना प्रकाश की आवश्यकता होती है वहाँ उतनाही प्रकाश करते हैं।(लो. ४)

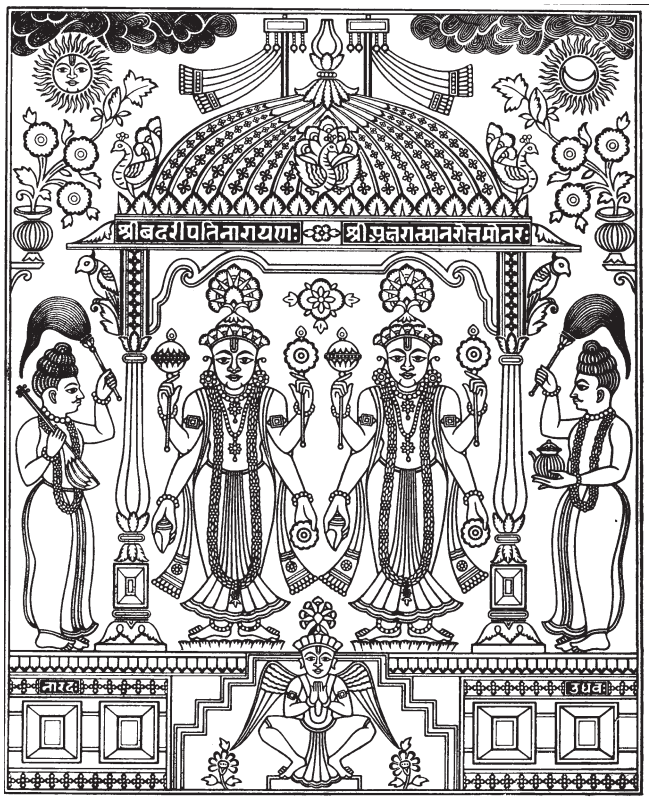

भगवान सभी में हैं किसी को दिखाई नहीं देते लेकिन भगवान की जैसी इच्छा ऐसा समझकर भगवान की भक्ति करनी चाहिए इसी में अपने को कृतार्थ समझें । उसे परिपूर्ण ज्ञानी कहा जायेगा ।(लो. ७)

भगवान के वचन में जितना सामर्थ्य के अनुसार रहा जा सके उतना अवश्य रहना चाहिए । लेकिन भगवान की मूर्ति का बल अवश्य रखना चाहिए ।(ग.म. ९)

तेज के विषय में भगवान की मूर्ति दिखाई देती है वह अति प्रकाश मय है । वह मूर्ति घनश्याम की है फिर भी वह अधिक श्याम वर्ण की नहीं दिखाई देती वह अधिक श्वेत दिखाई देती है । वह मूर्ति द्विभुज है, उस मूर्ति को दोचरण हैं । वह मूर्ति अतिशय मनोहर है ।(ग.म. १३)

इस वचनामृत में बताये हुए समाधिवाले आचार्यश्री तथा बड़े बड़े संतो द्वारा दिव्य आकृतिवाले किशोर स्वरुप में अमदावाद के रंग महल में विराजमान मूर्ति अक्षरधाम से प्रगट रुप होकर सभी को आनन्द प्रदान करती है । यह स्वरुपमूल तत्व है, इसी का ध्यान करना चाहिये । इसका ध्यान करने से अक्षरधाम की मूर्ति तथा रंगमहल में विराजमान मूर्ति दोनो एक रुप में ध्यान पथ पर आती है । इस मूर्ति में तथा अक्षरधाम की मूर्ति में अणुमात्र भी अन्तर नहीं है । इस लिये रंग महल के घनश्याम महाराज के स्वरुप का ध्यान करना चाहिये । शास्त्रो में मूर्ति का विवेचन किया गया है । उस के अनुसार सांगोपांग यथोचित है । संप्रदाय में घनश्याम महाराज की यह मूर्ति सर्व प्रथम बनी थी । दूसरे मंदिरो में प्रतिकृति करने का प्रयास किया गया है । यह स्वरुप आज से कहीब १३१ वर्ष पूर्व बनाया गया था । सभी अवतार पुरुषोत्तम में से ही प्रगट होते हैं । बाद में पुरुषोत्तम में लीन हो जाते हैं ।(ग.म. १३)

भगवान की मूर्ति में जो निष्ठा रखते हैं उनके हृदय में भगवान धर्म के साथ विराजमान रहते हैं ।(ग.म. १६)

जहाँ पर पुरुषोत्तम की मूर्ति, वहीं पर अक्षरधाम का मध्य है ।(ग.म. ४२)

जिन्हें भगवान के स्वरुप में निष्ठा हो उसे

समाधिलगे या न लगे तो भी वह निर्विकल्प समाधिवाला है।(व. १)

चिदाकाश के मध्य में भगवान की मूर्ति विराजमान है। उस मूर्ति को लेकर समाधिहो तो क्षणमात्र के लिये भगवान के स्वरुप में स्थिति होजाने से उसे होगा कि हजारों वर्ष तक समाधिका सुख भोगे।(व. ९)

जो महाराजका दर्शन करेंगे, जो हमारी वात सुनेंगे वे जीव सभी पापों ने मुक्त होकर परम पद को प्राप्त होंगे। (व. १२)

नेत्र बन्द करके भगवान की मूर्ति का ध्यान करने से जो सुख मिलेगा वह चौदह भुवन में अन्यत्र कहीं नहीं मिलेगा।(व. १६)

परमेश्वर का चिन्तन करते हुये जो भगवान का चिंतन करे तो चिंतन के बल से पंचविषयक जन्म मरण के बन्धन से मुक्त हो जायेगा।(अमदावाद-३) भगवान के चरणारविंद में जो अपना मन रखेगा वह भगवान के धाम में ही नहीं जायेगा बल्कि सशरीर भगवान के धाम को प्राप्त करेगा।(अ. ७)

सर्वावतारी भगवान श्रीजी महाराज के वचन को जो हृदय में धारण करेगा तो कलियुग में सभी सद्‌गुण उसमें स्वतः विराजमान हो जायेगें। मूर्ति में प्रगट भाव रखना चाहिये। अन्तर्यामी जानना, साक्षात् समझना यह एक ऐसा साधन है कि इसी में सभी सिद्धि समाई हुई है। मूर्ति में प्रगट भाव न आवे तो उसे अज्ञानी समझना। मूर्ति में अन्तःकरण अपने आप बाहर भीतर उसी स्वरुप को देखने लगेगा।

मंदिर में मूर्ति के सामने यथा शक्ति खडा रहना चाहिये। धीरे-धीरे अभ्यास हो जाने पर ऐसा अनुभव होने लगेगा कि हम महाराज के साथ वात कर रहे हैं। मंदिर में अनुकूलता न हो तो घर की मूर्ति के सामने बैठे. कीर्तन गाये, धुन करें, शास्त्र वाचे। भगवान के लिये कोई वस्तु लायें। दीपावली के समय जब घर के लोगों को वस्त्र खरीदें तो भगवान के लिये भी वस्त्र खरीदें।

ऐसा करने से बड़ा आनंद आयेगा। मूर्ति देखते रहना, मूर्ति में धर्म का निवास है। भक्ति माता की मूर्ति में है। ज्ञान-वैराग्य-आत्मनिष्ठा सभी मूर्ति में है। साकार उपासना का यही अर्थ है। श्रीजी महाराजने साकार रुप को प्रधानता दी है। मंदिर बनवाकर मूर्ति की प्रतिष्ठा करके उस मूर्ति के माध्यम से भजन-भक्ति उपासना की वात महाराजने की है। मूर्ति को हृदयाकाश में धारण करो। मानसीपूजा की व्यवस्था करो - स्नान करायें, वस्त्र अलंकार अर्पण करें, सिंहासन पर बैठायें, चन्दन लेप करे, फूल माला पहनाये, भावानुसार भोजन अर्पण करें, दक्षिणा अर्पण करे, साष्टांग प्रणाम करें, आन्तर चिन्तन में विध्न आये तो पुनः चिन्तन करते रहने पर आभ्यान्तर जगत में आनंद आने लगेगा। गढडा मध्य के १३ वें वचनामृत में धारण करने की उत्तमरीति समझाई गई है।

आध्यात्मिक क्षेत्र में यह सभी आवश्यक है। आध्यात्मिक क्षेत्र का मूल सत्संग है। सत्संग करने से ही आध्यात्मिकता आती है। इसलिये सत्संग करते रहने पर आध्यात्मिकता का मार्ग प्रशस्त बनता है।

मूर्ति की मनोकामना अष्ट आवरण भेद न करने की शक्ति होती है। विना सद्‌गुण के भी भगवान में दृढ भाव रखने से मूर्ति में निष्ठा बनी रहती है। मूर्ति का वारंवार स्मरण करते रहना चाहिये।

रंगमहल घनश्याम महाराज की मूर्ति का ध्यान करेंगे तो अक्षरधाम के स्वरुप में कोई भेद नहीं रहेगा। हम बड़े भाग्यशाली है कि अक्षरधाम के जो मुक्त लोग है जिस स्वरुप का ध्यान करते है उस स्वरुप का हम प्रत्यक्ष दर्शन कर रहे हैं। हम सभी को वही स्वरुप बड़ी सरलता से मिल गया है। इससे अधिक श्रीहरि हम सभी को और क्या देंगे।

॥ कृष्ण सेवा मुक्तिश्च गम्यताम् ॥

- प्रो. हितेन्द्रभाई नारणभाई पटेल (अमदावाद)

संसार में सभी लोग मोक्ष प्राप्ति के लिये अनेक उपाय करते हैं। लेकिन मुक्ति के बाद क्या ? इसका किसी के पास कोई उत्तर नहीं है। मोक्ष के बाद भी पंच विषयों का ही उपभोग करना हो तो ऐसी मुक्ति के लिये इतने उद्यम की क्या आवश्यकता।

परात्पर भगवान श्री स्वामिनारायण ने शिक्षापत्री के श्लोक १२१ में लिखा है कि ''भगवान श्रीकृष्ण की उपासना ब्रह्म के रुप में करना ही हमने मुक्ति मानी है। भगवान की सेवा मिले यही मुक्ति है। यह संप्रदाय आचार का है। आज्ञा का पालन उपासना का मूल है। धर्म मर्यादा में रहकर श्रीहरि की उपासना - भक्ति से ही आत्यंतिक कल्याण होता है, इसके बाद ही श्रीहरि की सेवा का अखंड सुख प्राप्त होगा।

इस लोक में भी सेवा किसकी करे, कैसे करे, क्यों करे, इन सभी विषयों पर खूब विस्तार पूर्वक ग्रंथो में लिखा हुआ है। उसमें से कुछ यहाँ लिखा गया है। भगवान श्रीहरि जब वर्णीरुप में थे तब सेवकराम की नि:स्वार्थी से सेवा की थी। रामानंद स्वामी के आश्रम में भी गोबर उठाने से लेकर आश्रम के जितने भी कार्य थे सभी किये। सदाव्रत चालु कराकर तीर्थयात्रियों की सेवा किये। बाल घनश्याम के रुप में माता-पिताकी सेवा किये। इस तरह आचरण करके बताये। शि.प. श्लो. १३९ में लिखा है कि - माता-पिता-गुरु तथा रोगातुर की सेवा जीवन पर्यन्त करनी चाहिए। इन सभी की सेवा पात्रता देखे विना भी करनी चाहिए। इस तरह सेवा करने से ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। धन की सेवा की अपेक्षा शरीर की सेवा श्रेष्ठ है। धन की सेवा सहयोग कहा जायेगा, लेकिन शरीर सेवा सेवा कही जायेगी।

भगवान श्री हरि ने मात्र सेवा का संकल्प नहीं किया बल्कि सेवा का कार्य भी किया है। स.गु. निष्कुलानंद स्वामीने लिखा है कि -

हरि मंदिर सारुं हमेश,
ले वो एकेकुं पथरो शीष ॥
आज अमे पण एक लेशुं,
वासुदेव नी भक्ति करीशुं ॥
पछी सोनेरी पाधने माथे,
लीधो छे एक पथरो नाथे ॥

श्रीहरि का उपदेश कैसा है कि हरि मंदिर के लिये मस्तक पर पत्थर उठाना पडे तो वासुदेव की भक्ति का स्वरुप है, यह अपने जीवन में स्वयं चरितार्थ किया है। आज से कुछ वर्ष पूर्वे ठाकुरजी की सेवा-पूजा के लिये कहीं किसी काम के लिये मंदिरो में कर्मचारी नहीं थे। वह सभी कार्य संत-हरिभक्त हाथो हाथ कर लेते थे, यही सेवा है। मोबाइल फोन जैसे इलेक्ट्रोनिक उपकरणों में कथा कीर्तन सुनना ठीक है, उसकी अपेक्षा श्रीजी महाराज के समक्ष उच्च स्वर में गान करना श्रेष्ठ है।

ग.अं. ३५ में श्रीहरिने कहा है कि छ लक्षण वाले साधु की सेवा करने से भगवान की सेवा का फल मिलता है। ''निष्कुलानंद स्वामी ने लिखा है कि ''तमने मानशे पूज शे जे हरे, मोटा सुखने पामशे तेह रे''। धर्मवंशी आचार्य महाराज की सेवा करने से बड़े सुख की प्राप्ति होती है ऐसा श्रीहरि का वचन है। ग.म. २५ वें वचनामृत में श्रीहरि कहते हैं कि ''जेवुं उकाखाचर ने संत नी सेवा कर्यानु व्यसन पड्या छे तेवी रीते भगवान अने भगवानना संत तेनी सेवा कर्यानु जेने व्यसन पडे तेना

अन्तःकरणनी जे मलिन वासना ते सर्वे नाश पामी जाय छे''।

ग.म. ७ वें वचनमृत में श्रीहरि कहते हैं कि ''जे वैराग्य हीन ते तो कोई मोटा संत होय तेनी अतिशय सेवाक रे अने परमेश्वर नी आज्ञामां जेम कहे तेम मंड्या रहे..... तो सर्वे विकार तत्काल रडी जाय अने साधने करी ने तो बहु काल मेहनत करतां करतां आ जन्मे टले अथवा बीजे जन्मे टले'' । इस तरह काम क्रोधादिक विकार को दूर करने का एक मात्र साधन सेवा है। ग.अं. ५ वें वचनामृत में श्रीहरि कहते हैं कि ''मोटा पुरुष तेनी ज सेवा ने प्रसंग तेमांथी महात्म्ये सह वर्तमान एवी जे भक्ति ते जीवना हृदयमां उदय थाय छे'' । महात्म्यज्ञान के साथ भक्ति का उदभव सेवा से ही होता है।

भगवान के दो प्रकार के भक्त होते हैं - (१) सकाम, (२) निष्काम।

श्रीहरिने निष्काम को सबसे प्रिय बताया है। गीता में भी भगवान श्रीकृष्ण ने निष्काम भक्तको ज्ञानी कहा है। सकाम भक्त को अर्थार्थो कहा है। इसलिये भगवान की सेवा निष्काम भाव से करनी चाहिए। भगवान से किसी प्रकार की चाहना वगर सेवा करनी चाहिए । संत-हरिभक्त धर्म वंशी आचार्य की जब सेवा करें तो भगवान की सेवा कर रहे हैं ऐसी भावना करनी चाहिए। ग.म. ५९ वें वचनामृत में कहते है कि ''भगवान नी संतनी सेवा तो बहु मोटा पुण्यवालाने मले छे पण थोडा पुण्यवालाने मलती नथी । पूर्वजन्म मां भगवान नी के भगवानना भक्तनी प्राप्ति थई हशे तथा तेमनी सेवा करी हशे तेनो तो आ जन्ममां भगवान के भगवानना भक्तमांथी हेत माटे ज नही'' । सच्चे संत-हरिभक्त को धर्मवंशी आचार्यश्री की सेवा का अवसर मिले तो श्रीहरि के इन वचनों का अवश्य याद रखे। इससे भगवान की प्रसन्नता मिलेगी। धन से सेवा करनी हो या अन्न वस्त्रादि से सेवा करनी हो, या शरीर से सेवा करनी हो जो भी हो उसे तत्काल स्वीकार कर लेना चाहिए। जिससे सेवा करनी है वह सभी वस्तुयें नाशवंत है। लेकिन सेवा का फल शास्वत है।

ग.म. ४० वें वचनामृत में श्रीहरि कहते हैं कि ''भगवान ना भक्तनी मने-वचने-देहे करीने जे सेवा वनी आवे ने तेणे करीने जेवुं आ जीवनुं रुडुं थाय छे ने ए जीवने सुख थाय छे तेवुं बीजे साधने करीने नथी थतुं''। श्रीजी महाराजने सबसे सरल उपाय सुखी होने के लिये सेवा को बताया है। श्रीहरि ग.म. ३३ वें वचनामृत में कहतैं हं कि ''अमने निष्कामी भक्त होय तेना हाथनी ज करी सेवा गमे छे। माटे आ मूलजी ब्रह्मचारी छे ते अतिशय गमे छे। अने बीजो कोई सेवा चाकरी करे तो ते एवी गमती नथी''। श्रीजी महाराजकी ऐसी आज्ञा को शिरोधार्य करके जो सेवा को ही सर्वस्व मानता है उसका सर्वविधकल्याण होता है।

श्रीहरि ग.म. ३१ वें वनचामृत में कहते हैं कि ''वचने करीने कोईने दुःख वे छे पण भगवान अथवा संतनी सेवा करे छे ते श्रेष्ठ छे अने निवृत्तिने विशे रहे छे ने कोईने दुःखवतो नथी ने तेथी भगवाननी तथा संतनी कांई सेवा थती नथी तेने असमर्थ सरखो जाणवो ने टेलचाकरी रहे छे तेने भक्तिवालो कहिये, ते भक्तवालो श्रेष्ठछे।

इस तरह इस संप्रदाय में सेवा की महिमा अपरंपार वर्णित है। मलिन वासना की निवृत्ति के लिये, जीव को सुखी करने के लिये, विकारमात्र से निवृत्ति के लिये सेवा ही उत्तम उपाय है। थोड़े पुण्यवाले को यह सेवा नहीं मिलती । जब भी छोटी-बडी सेवा का अवसर मिले अवश्य करनी चाहिये। श्रीजी तथा उन्हीं के अपर स्वरुप धर्मवंशी आचार्य में जो दृढ भक्तिका भाव रखकर सेवा करेगा, निश्चित ही उसका कल्याण होगा, इहलोक तथा परलोक दोनो सुखी होगा।

श्री स्वामिनारायण

शिक्षापत्री के पालन से वसंत की अनुभूति

- गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

भगवान स्वामिनारायने उपासनाकी शुद्धि के लिये अपने ही स्वरुप श्री नरनारायणदेव की प्राण प्रतिष्ठा की थी । दीक्षा की सुमगता के लिये अपने अपर स्वरुप धर्मवंश में से आचार्य पद की स्थापना किये, इसी तरह अपने आश्रितों के वर्ण आश्रम की मर्यादा में रहकर जीवन पावन करने की मार्ग दर्शिका रुप सर्वशास्त्रों की सार रुपा शिक्षापत्री स्वयं की बाड्मय को अपने हाथों से लिखकप संवत् १८८२ वसंत पंचमी को सत्संग समाज को भेंट में दी । वसंत पंचमी शिक्षापत्री का प्रागट्य दिन है । जो शिक्षापत्री की आज्ञा का पालन नहीं करे उनके जीवन में आधि-व्याधि-उपाधिरुप दु:ख वैशाख-जेठ महीने के ताप जैसे हरदम तपाता रहता है । इसके अलांवा सांसारिक दु:ख एवं यमयातना जैसे दु:खों से आक्रांत रहना पड़ता है । शिक्षापत्री के पालन से पृथ्वी पर रहने वाले सभी मनुष्यो के जीवन में सदा वसंत जैसा वातावरण बना रहता है । जिसेक जीवन में पूर्व का पुण्य उदय हुआ हो वही इस रहस्य को समझ सकता है । आसुरी तत्वों के लिये शिक्षापत्री नहीं है ।

मनुष्य यदि शिक्षापत्री की आज्ञा का पालन करे तो पशु की हिंसा बंद होजाय, अनीति, भ्रष्टाचार, लांच, रिश्वत बंद हो जाय मानवधर्म को मानने वालो को शिक्षापत्री का अवश्य अभ्यास करना चाहिए । इसका कारण यह है कि शिक्षापत्री में सर्व प्रथम मनुष्य बनने की वात की गई है । इसके बाद भक्त बनना सिखाती है । जगत की दृष्टि इसलोक के सुख तक पहुंचती है । भगत की दृष्टि परलोक तक जाती है इसलिये शिक्षापत्री की आज्ञा का पालन करना हितावह है । इसके अलांवा श्रीहरि के आज्ञा का बल होने से मानव के धर्म से नीचे नहीं गिरता ।

श्रीहरि के आश्रितों के लिये इष्टदेव स्वामिनारायण भगवान के होते हुए भी शिक्षापत्री की आज्ञाको मानने से विष्णु, शिव, गणपति, पार्वती तथा सूर्य इन पांच देवो की पूजा करते है । इतना ही नहीं बल्कि मूल स्वामिनारायण संप्रदाय के मंदिरो में इन पांच देवो के उपरान्त धर्मकुल के कुल देवता श्री हनुमानजी की पूजा की जाती है । श्री नरनारायणदेव, श्री लक्ष्मीनारायणदेव, श्री राधाकृष्णदेव, श्री रेवती बलदेवजी इत्यादि श्रीहरि के विविधस्वरुप भी मंदिरो में प्रतिष्ठित किये जाते हैं । इसके अलांवा ११ वर्ष की उम्र वाले घनश्याम महाराज, श्री नीलकंठ वर्णी, श्रीहरिकृष्ण महाराज, श्री सहजानंद स्वामी, श्री नारायणमुनि देव या श्री स्वामिनारायण भगवान इत्यादि मूर्तियो को भी प्रतिष्ठित किया जाता है । इन मूर्तियों के दर्शन मात्र से सत्संगियो के जीवन में वसंत लहराने लगता है । हरिभक्त मात्र हरिजयंती (रामनवमी) का उपवास नहीं करते परंतु शिक्षापत्री के अनुसार जन्माष्टमी, शिवरात्री, एकादशी इत्यादिक व्रत करते हैं । सत्संगी के जीवन में शिक्षापत्री में लिखे हुए धर्म नियम की ऊँची दीवाल होने से तथा प्रत्यक्ष श्रीहरि की निगरानी होने से काल, माया, पाप कर्म के यमदूत का कुछ क्षी नहीं चलता । अंतकाल में स्वयं श्रीहरि अपने आश्रितों को लेने आते हैं । अपने शास्वत अक्षरधाम में ले जाते हैं ।

शिक्षापत्री की आज्ञा का पालन संसार के सभी लोग करने लगे तो जूआ, भागं, गांजा, सिगारेट, तमाकू जैसे मादक द्रव्य का सेवन करना बन्द हो जाय । लोग पानी-दूध-इत्यादि रस पदार्थो को कपड़ा सेगार के

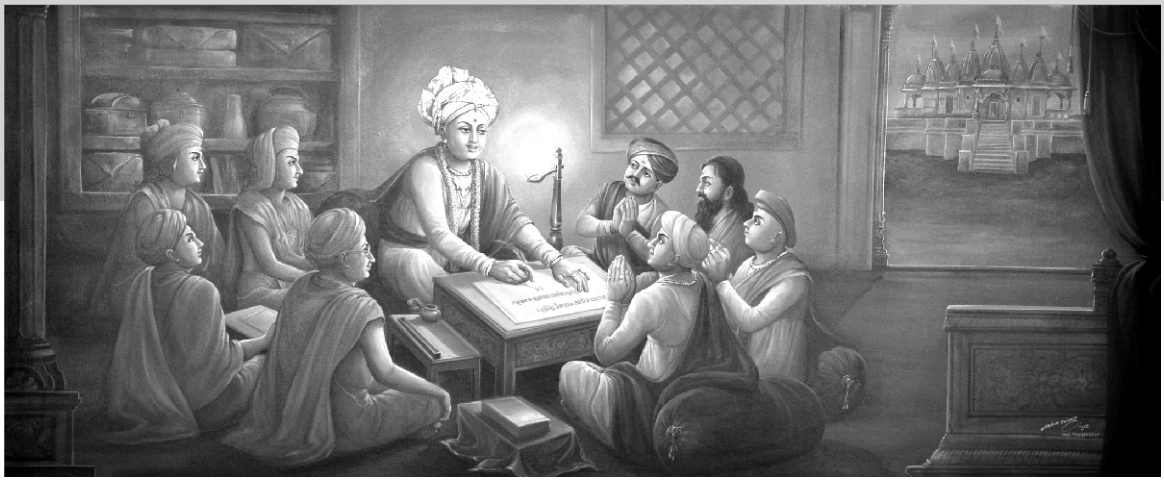

पीने लगे तो इससे रोग का प्रमाण घट जायेगा । मिथ्या अपवाद, आरोप, गाली देना, निंदा करना, चुगली करना इत्यादि सभी बंद हो जाय । अपना या पराये का द्रोह आपत्ति काल के सिवाय असत्य बोलना बन्द होजाय । कुसंगी, कृतध्नी तथा दुष्ट-पापी के संगरुप दोष से वंचजायेगा । प्याज-लसुन इत्यादि अभक्ष्य वस्तु खाने से जो दोष लगता है उससे बच जायेगा । मार्ग तथा बाग-बगीचे इत्यादि अपने आप स्वच्छ हो जाय । पान-मसाला की पिचकारी तथा तमाकू-गुटखा-बीडी-सिगारेट के पीने से बचे टुकडे कहीं दिखाई नहीं देंगे और सर्वत्र स्वच्छ ही दिखाई देगा । स्वच्छता अभियान की आवश्यता ही न पडे ।

साधुपुरुषों के समागम से मोक्षका मार्ग खुल जायेगा । सूर्य उगने से पहले उठने सेआरोग्यता का लाभ होगा । प्रातः स्नान-पूजापाठ इत्यादि नित्य क्रम करना तथा देव दर्शन करना यहमनुष्य मात्र का कर्तव्य शिक्षापत्री सिखाती है । धर्म-ज्ञान-वैराग्य युक्त भगवान की भक्ति करके मोक्ष सिद्ध करलेना चाहिये । मनुष्य जन्म का हेतु शिक्षापत्री सिखाती है । दीक्षा लिये विना भगवान की सेवा पूजा करने का अधिकार नहीं है । दीक्षा की विधिशिक्षापत्री में निरुपण की गई है । शिक्षापत्री की आज्ञा का पालन करने से घर में, कुटुंब में, समाज में एकता होने से वृद्धि होती है । व्यवहार में लाभ होता है । धन की लेन देन लिखित करने से पीछे से कोई झघडा झंझट नहीं रहता । शिक्षापत्री को वांचने से जीव-माया-इश्वर का ज्ञान होता है । भगवान के स्वरुप का ज्ञान होता है । अलग-अलग व्यक्ति से कैसे वर्तन करना चाहिये यह शिक्षापत्री सिखाती है ।

गृहस्थ को दशांस-वीशांस दान करके द्रव्य शुद्धि की वात की गई है । सभी के धर्म-मर्यादा-वर्ण-जाति के अनुसार धर्मका पालन करने की वात श्रीजी महाराजने की है । गृहस्थ पुरुष-माता-पिता की सेवा करे तो वृद्धाश्रम अपने आप बन्द हो जाये । सधवा स्त्री शिक्षापत्री की आज्ञा का पालन करे तो संबन्धविच्छेद की वात नहीं होगी । साधु यदि स्त्री-धन के त्याग रुपी धर्म का पालन करे तो उसके जीवन में कलंक नहीं लगेगा । भक्त बनने के बाद उदासीना तथा ध्यान करने की रीति शिक्षापत्री सिखाती है ।

शिक्षापत्री के वांचने में हेतु नहीं है, परंतु आचरण में उतारने से लोक-परलोक में सुख आने से वसंत की लहर सर्वत्र लहराने लगेगी । महा सुखिया होने का वचन श्रीहरिने शिक्षापत्री में दिया है, लेकिन उसकी अनुभूति तो सिक्षापत्री का यथार्थ आचरण करने में है ।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

अपने श्री स्वामिनारायण के म्युजियम में वसंत खिली हुई है । जिस तरह आपस में संवाद होता है, ठीक उसी तरह प्रकृति का संवाद होता है, वह यहाँ पर सुनाई देता है ।

वर्तमान समय में अपने प्रकृति प्रेमी प.पू. बड़े महाराजश्री के कक्ष के बाहर खुले स्थान में एक अद्‌भुत कार्य हो गया । पतझण के अवसर पर वसंत के स्वागत में प्रकृति के समक्ष पू. बापजी विराजमान होकर खूब प्रसन्न दिखाई दे रहे है । चारो तरफ पू. बापूजी की पसन्दगी के वृक्षो के पवन से अपने पत्तों की खड़खडाती आवाज से मंद मंद पवन के झकारों से श्रीहरि के अपर स्वरुप पू. बापजी के चरण में हवा देने से यह स्थान मानों किसी अलौकिक अनुकूल वातावरण का श्रृजन कर रहा हो । श्रीजी महाराज संत-हरिभक्तों के साथ किसी गाँव की सीमा में म्युजियम के होल नं. ७ में रखे गये चंदोवा के नीचे सभा करते रहे होंगे तब ऐसा ही दृश्य सृजित होता रहा होगा । अपने नंद-संत बड़े ही समर्थ शाली थे वे जैसा चाहते वैसा वातावरण बना लेते थे । यहाँ के वातावरम में अलौकिक आकर्षण है इसी लिये तो अमदाबाद में अन्यत्र कहीं भी ऐसा वातावरण न होने से यहाँ म्युजियम में मेहमान बने है । सम्पूर्ण म्युजियम के परिसर में बेवर ब्लोक डाला जा रहा है । जिससे सम्पूर्ण श्रीजी महाराज के प्रसादी की वस्तुओं के कारण यहाँ की दीव्यता और भी अलौकिक हो गई है । इसी तरह बाहर के भाग में जिस तरह श्रीजी महाराज विचरण करते तथा सभा करते ठीक उसी तरह उसी परंपरा का अनुकरण यहाँ म्युजियम में प.पू. बड़े महाराजश्री में दृष्टिगत होता है । म्युजियम में अपनी उपस्थिति अर्थात् अपने लिये मोक्ष का मार्ग खुले जैसा है ।

ता. २१-२-२०१६ रविवार को विसनगर मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर ८०० से १००० भक्त म्युजियम के दर्शनार्थ आये थे । वर्तमान में एक हरिभक्तने पुत्र जन्म के लिये संकल्प किया था वह संकल्प पूर्ण होते ही श्री नरनारायणदेव के समक्ष अपने पुत्र को चांदी से तोलाकर पूरी चांदी को म्युजियम में अर्पण कर दी थी ।

– प्रफुल खरसाणी

केवल वोडाफोनवालों के लिये

प.पू. बड़े महाराजश्री के स्ववचनवाली कोलरट्युन मोबाईळ में डाउन लोड करने के लिये अधोनिर्दिष्ट करें ।
मोबाईल में टाईप करें : **cf 270930** टाईप करें **56789**
नम्बर पर : **S.M.S.** करने से कोलरट्युन प्रारंभ होगा । नोंट : **cf** टाईप करने के बाद एक स्पेस छोड़कर

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि फरवरी-२०१६

रु.४५,०००/-	केशवलाल शंकरलाल, मंगलाबहन केशवलाल तथा तनसुखभाई केशवलाल - लांघणज।
रु.११,०००/-	धीरजभाई के. पटेल - सायन्ससीटी।
रु.१०,०००/-	अ.नि. सुधाकरभाई जेठालाल त्रिवेदी - मणीनगर
रु.५,१५१/-	मीठाभाई आदरभाई पटेल - जमियतपुरा-गांधीनगर
रु.५,००१/-	श्री बिपीनभाई गोपालभाई - अमराईवाडी।
रु.५,०००/-	अमृतलाल केशवलाल पटेल - वडुवाला।
रु.५,०००/-	मीनाबहन के. जोषी - बोपल।
रु.५,०००/-	अ.नि. सेजलबहन चंदुभाई ठक्कर - अमदावाद।
रु.५,०००/-	अ.नि. ललितकुमार जी. भट्ट कृते गं.स्व. देवीमानीबहन भट्ट - अमदावाद।
रु.५,०००/-	पोरिया कबीर अल्पेशभाई - घूडकोट।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि (फरवरी-२०१६)

ता. ०३-०२-२०१६	मीनाबहन महेन्द्रभाई पटेल - कृते निधिबहन - अमदावाद।
ता. ०५-०२-२०१६	श्याम रवजीभाई पटेल - राधिका श्याम पटेल - प्रगतिनगर, नारणपुरा।
ता. १४-०२-२०१६	दिनेशभाई परसोत्तमदास पटेल - राणीप।
ता. २६-०२-२०१६	लखमशीभाई लालजीभाई भावाणी - कृते भरतभाई तथा कांतिलाल सांधली - वडोदरा।

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. बड़े महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा। महाभिषेक लिखवाने के लिए संपर्क कीजिए।

म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६

www.swaminarayanmuseum.org/com • email:swaminarayanmuseum@gmail.com

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

कृपा प्रदाता श्रीहरि

(शास्त्री हरिप्रियदासजी, गांधीनगर)

सतयुग में बहुत प्रयत्न करने पर भी मोक्ष की प्राप्ति की कोई गेरंटी नही थी । त्रेतायुग में यज्ञो को करने पर भी और अपनी सारी संपत्ति न्योछावर करने पर भी मोक्ष की कोई गेरंटी नही थी । द्वापरयुग में भी सेवा करके आधी जिंदगी खत्म हो जाय तो भी मोक्ष प्राप्ति होगी भी के नहीं यह निश्चित नही था । परंतु कलयुग में स्वामिनारायण भगवानने स्वयं प्रकट होकर मोक्ष का मार्ग सहज कर दिया है।

"जेने कोईए ते आवो मोक्ष मागवा रे लोल....
आप धर्मवंशीने द्वार......"

कोई भी मुमुक्षु भगवान के भावपूर्ण दर्शन करेगा तो उसका भी श्रेय होगा । समर्पण थोड़ा होय अधिक परंतु भाव पूर्ण समर्पण हो तो सरलता से मोक्ष मिल जाता है।

यह बात एक ब्राह्मण की है। स्वामिनारायण भगवान लोया गाँव में सुरा भक्त के दरबार में बिराजमान थे । बहुत बड़ा शाकोत्सव मनाया गया उसके बाद भी यह सभा थी । गाँव-बाहर गाँव से आये भक्तजन भगवान की पूजा कर रहे थे । कोई सोने के जेवर लाया तो कोई भारी-भारी अलंक्रित वस्त्र महाराज को अर्पण करने लगा कोई रुपिया-पैसा से भरा थाल महाराज के समक्ष रखने लगा । उसी समय एक ब्राह्मण महाराज के पास आये । प्रतीत होता था कि सुदामा से भी अधिक गरीबी थी उनके साथ । महाराज को भेट देने हेतु बंधी हुई पघडी से गाँठ खोलने लगे । दो-तीन गांठो को खोलने के बाद एक रुपिया मिला । वही प्रभु के चरणों में समर्पित कर दिया । पूरे जीवन की एक मात्र कमाई वह एक रुपिया था ।

अंतर्यामी श्रीहरिने सभा में लहा कि, भूदेव ! आपने एक रुपिया मुझे समर्पित कर दिया है, अच्छा होता कि आप नयी पघडी ले लेते, आप की पघडी फट गयी है । भूदेवने कहा, महाराज ! मेरे ह्रदय की ईच्छाथी की आपको कुछ समर्पित करुं । परंतु कोई जुगाड नहीं हो रहा था । कुछ समय पहले कुछ ब्राह्मणों को भोजन करने हेतु बुलाया था । सभी भूदेवो को भोजन पश्चात दक्षिणा स्वरुप एक रुपिया दिया गया । मैंने वह एक रुपिया संभालकर पघडी में बांधलिया । जब महाराज के पास जाऊँगा तो महाराज को अर्पित कर दूंगा । पघड़ी तो कही-पुरानी चल जायेगी परंतु अब मेरे ह्रदय की इच्छा पूर्ण हो गयी उसका मुझे आनंद हो रहा है।

श्रीहरिने कहा, भूदेव, आपने तो सर्वस्व दान कर दिया । कोई लखपति लाखो का दान करे उससे भी अत्यधिक है पर एक रुपिया । श्रीजी महाराजने मुक्तानंद स्वामी से कहा कि - इन भूदेव का मोक्ष हेतु अब कोई कार्य शेष नहीं है । क्योंकि इन्होंने अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया है। भगवानने प्रसन्न होकर भूदेव को अभयदान दिया।

"कोईना भार न राखवे मुरारी,
आपे व्याज सहित गिरधारी ।

एक रुपिये के दान से, भाव समर्पण से ही मोक्ष का वरदान मिला और आजीवन सुखमय व्यतीत भी किया । ठाकुरजी को भाव से कुछ भी अर्पण किया जाय तो ठाकुरजी उसे स्वीकार कर लेते हैं । कृपा प्रदान करने वाले श्रीहरि की कृपा का कोई पार नहीं है । इसलिये भगवान की कृपा का पात्र बना रहना ही भक्त का उत्तम लक्षण है।

•

भगवान ने भक्त की रक्षा की

- नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

कई बार यह देखने में मिलता है कि नीति से धर्म से व्यवहार चलाने वाला दुःखी होता है तथा अनीति से,

किसी को दुःखी करके भी सुखी होता है । लेकिन एक वात तो सत्य है कि अन्त में विजय तो स्वयं की होती है, नीति से धर्म पालन करने की जीत होती है । हाँ इतना अवश्य है कि कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है, लेकिन इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण में प्रीति-श्रद्धा हो तो उसका काम कभी नही रुकता, भगवान उसके सहायक हो जाते हैं ।

यह वात है कडी के पास कुंडल गाँव की । कुंडल गाँव में कला भगत स्वामिनारायण भगवान के बड़े निष्ठावाले हरिभक्त थे । महाराज की भजन-भक्ति-सेवा सत्संग महाराज की आज्ञा में रहकर करते थे । आजीविका भी उन्हीं की आज्ञा में चलती । भगवान की ऐसी कृपा कि थोड़ी मेहनत से भी खूब फसल हुई । कला भगत की ऐसी सुख समृद्धि देखकर अगल बगल वालों को ईर्ष्या होने लगी । वे सोचने लगे कि जिसकी तरह कला भगत को दुःखी देखना है । उन लोगो के खेत भी कला भगत के खेत के बगल में था । चार-पांच लोगो ने एकत्रित होकर निश्चय किया और कला भगत को कह दिया कि जिस खेत में तुम खेती कर रहे हो वह हमारा है । इस में तुम्हें पैर नही रखना है । अभी तक हमने तुम्हें खेती करने दिया परंतु अब वह तुम्हारा नही हमारा है । कभी भुलकर भी इस खेत में पैर मत रखना ! कला भगतने कहा कि, सालों से हमारे पुर्वज-परिवार इस खेत के मालिक थे । वे दुष्ट लोग कहते हैं कि यह सब नही चलेगा । यह खेत मेरा नही है । उन लोगो ने बस खेती करने दिया है वास्तव में तो यह खेत उन लोगो का है ।

इन लोगो को ज्ञात था कि कला को यह खेती नही करने दीया तो अधिक से अधिक वह सरकार के पास जायेगा । वहाँ भी हम निपट लेंगे । कड़ी जाकर सरकारी अधिकारीयों को रिश्वत दे आये । और कला की बात नहीं सुनने को कह दिया । कला भगत ने बहुत प्रयास किया । किसीने एक नही सुनी । कला भगत न्याय के लिये कडी गये । किसीने वहाँ भी नही सुनी । कला भगतने भगवान का रास्ता देकर अधिकारीयों से बहुत विनती की, अधिकारीयोंने कहाँ हम आयेगे लेकिन तुम्हें धर्म का न्याय करना होगा । जो सही है वह तो अपने आप ज्ञात हो ही जायेगा ।

दूसरे दिन वे अधिकारी दो-चार आदमीयों को लेकर कुंडल आ गये । कला भगत के खेत में एकत्र हो गये । आज तो पूरा गाँव ही जुठा हुआ था । और यह तप किया गया कि लोटे गीले को आग में तपाकर उसे गर्म करके कला भगत को अपने हाथों में लेकर जितना उसका खेत होगा उतने खेत के हिस्से में चक्कर काटने होंगे । जब तक हाथ न जले उतने चक्कर काटे हुए खेत का हिस्सा उसका होगा । सभी के मन में कौतुहल था कि क्या होगा । उन दुष्टों के मन में तो था कि कला भगत का हाथ जल जायेगा और उतना खेत उसका हो जायेगा ।

खेत के एक कोने में आग में गोले को डालकर खूब तपाया गया । गोला जलकर लाल हो गया । अधिकारीओंने कला भगत से गोले को हाथ में लेकर चक्कर काटने का फरमान किया । कला भगत भगवान का ध्यान करके प्रार्थना की हे प्रभु मेरी रक्षा करना, मुझे तो आपका ही आशरा है । मेरी लाज रखना । उस सयम महाराज साधु रुप धारण करके प्रगट हुए और कला भगत से कहा, उठाओं गोला, सोच क्या रहे हो ?'' कला भगतने गोला उठाया और खेत के किनारे किनारे चलने लगा ।

उन दुष्टोने सोचा कि कला का हाथ तो जल ही नही रहा है । यही वह हमारे खेत में चला गाया तो हमारा खेत भी उसीका हो जायेगा । परंतु वह तो कला वे सिर्फ अपने खेत की सीमा में धूमते रहे, फिर पुरा चक्कर काटकर वापस लौटकर गोला जमीन पर रख दिया । उस समय खेत का घास गोले की जलन से जल उठा । उसी से लोगोने अंजा लगाया कि गोला कितना गर्म रहा होगा । उन दुष्टो के मुँह काले हो गये । अधिकारीयों ने उसी सयम सभी के सामने दस्तावेज लिख दिये कि यह खेत कला भगत का ही है । और कला भगत सच्चे इन्सान है । उस समय सभीने जयकार बुलाया ।

स्वामिनारायण भगवान की जय
स्वामिनारायण भगवान की जय
कला भगत की जय.....

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से)
एकादशी सत्संग सभा प्रसंग पर कालुपुर मंदिर हवेली "किसी भी परिस्थिति में भी श्रद्धा अडिग होनी चाहिए"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

जिन व्यक्ति को परमात्मा, सत्शास्त्र तथा सत्पुरुष में श्रद्धा होती है उसीका ज्ञान टिका रहता है । ऐसा कहा जाता है कि सिंहण का दूधसुवर्ण के पात्र में ही टिकता है। जिस प्रकार दीपक तेल बिना नही रहता है, नाव पानी में ही तैर सकती है उसी प्रकार श्रद्धा के अभाव में ज्ञान नहीं टिक सकता । प्रत्यक्ष रुप से 'श्रद्धा' तथा विश्वास होना चाहिए । शास्त्र में भी कुछ चीज ऐसी है जो समझ से परे है । फिर भी उसमें विश्वास रखना चाहिए । क्योंकि वह सत्य है । यदि आज से सो वर्ष पूर्व कोई कहता कि एक ही कमरे में बैठकर पुरी दनिया से बात की जा सकती है तो ये बात किसी के मानने में भी नहीं आती । परंतु वर्तमान में यह वास्तविकता हो गयी है । क्योंकि सभी के पास मोबाईल है । उसी प्रकार शास्त्र में कुछ चीजे मान्य नहीं आती फिर भी श्रद्धा से उसमें विश्वास रखना चाहिए ।

एक बार एकभाई समुद्र में नाव लेकर जा रहे थे वह नाव पल्टी खा गयी । सामने एक द्विप या वह वहाँ पहुंच गया । वहाँ से वापस लौटना संभव नहीं था । श्रद्धा थी कि यहाँ दो-तीन दिन गुजार लूंगा । सायद कोई रास्ता मिल जायेगा, कोई सहायता मिल जायेगी । वहाँ झोंपडी बनाकर रहने लगा । एक दिन रात्रि में बीजली के साथ बारिश हुई । बीजली श्रद्धा तुट गयी और भगवान से कहने लगा कि मैने क्या पाप किया है । ''मुझे क्यों परेशान कर रहे है । अग्नि को देखकर लोग सहायता करने के लिये यहाँ पहुंच गये । इसीलिए झोंपडी का जलना उसके हित में ही था । कहने का अर्थ यह है कि किसी भी परिस्थिति में श्रद्धा नहीं खोनी चाहिए । प्रत्येक परिस्थिति में समाधान ही योग्य है । आपत्ति में समाधान हो जाता है । कोई ऐसा मकान नहीं होता जिसमें खिड़की-दरवाजा न होता हो । इसका मतलब भगवान किसी के सभी दरबाजे बंद नहीं करते । कभी ऐसा होता है कि थोड़ा भी धक्का मारें तो वह दरवाजा खुल जाता है। लेकिन दर से देखकर ऐसा मान लेते हैं कि बंद है । कभी दरवाजे को खट खटाना पडता है । तब दरवाजा खुल जाता है ।

थोमस एडिसन वैज्ञानिक थे । उन्होंने इलेक्ट्रिक बल्ब का आविष्कार किया था । उसमें वे एक हजार वार असफल हुये थे । बाद में उन्हें सफलता मिली । पहलीबार ट्रेन में वे चाय बेच रहे थे । उन्हें कम सुनाई देता था । वह भी बंद हो गया । तीन वर्ष तक ऐसा ही रहा । बाद में जब उन्हें पैसा मिलातो दवा करवाये और ठीक हो गया । लोग उनसे पूछे कि आप तीन वर्ष तक कैसे बिताये । वे बताये कि हमारा बाहर का कान खुला नही था, परंतु अंदर का कान चालू था । उनका जो काम नहीं हुआ था वह तीन वर्ष में हो गया । इन्हीं तीन वर्षो में उन्होंने सभी प्रयोग किये थे । इसका मतलब यह कि जीवन में कभी भी धैर्य छोडना नहीं चाहिए । जब कि अपने जीवन में तकलीफ आती है तो भगवन ऐसी कोई वस्तु दे देते हैं जो जीवन में

सहायक बन जाती है। धैर्य रखना तथा उद्यम करते रहना । जो लोग समुद्र में डुबकी लगाते हैं वे भीतर जाकर (कुझ न कुछ तो लेकर आते ही है। जो लोग किनारे पर खडे रहते है उनके हाथ में कुछ नहीं लगता । कुछ ऐसा टेन्शन होता है जब सभी एकत्रित होते हैं . तभी उसका रास्ता मिल जाता है । इस में ऐसा समझना चाहिए कि भगवान निश्चित रुप से कुछ प्रेरणा करते हैं।

हम जगत में देखते हैं कि लोग एक दूसरे के ऊपर विश्वास रखते हैं : बेटा बेटी - अन्य घर के सदस्य पर विश्वास करते हैं। ऐसा कभी नहीं होता कि ए सभी हमें छोडकर चले जायेंगे । गाडी के ड्राईवर पर कितना विश्वास होता है। आराम से सो जाते है। ड्राईवर को कह देते हैं कि हमें यहाँ जाना है।

इसी तरह परमात्मा के ऊपर विश्वास रखें तो परमात्मा भी अपने ऊपर विश्वास रखता है। निराशा दूर हो जाती है। जीवन में आगे बढने की हिंमत आती है। विश्वास खूब जरुरी है। पिता पुत्र हो तथा पुत्र चारित्र्यवान न हो फिर भी पिता सब कुछ बता नहीं देता । पुत्र चारित्र्यवान हो तथा आज्ञाकारी हो तो पिता उससे कुछ छिपता नहीं है। इसी तरह परमात्मा में भी श्रद्धा हो तो सभी ज्ञान प्रदान कर देता है। इसलिये आप सभी की श्रद्धा तथा विश्वास को परमात्मा खूब दृढ बनावे एसी परमातमा के चरणों में प्रार्थना।

●

आज्ञाविधि- निषेध

- सां.यो. कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

समग्र विश्व के सर्जनहार परमात्मा का सर्व श्रेष्ठ सृजन मानव है। परमात्मा ने अन्य किसी भी सर्जन को जो दान नहीं दिया वैसा सर्वश्रेष्ठ दान बिना मूल्य ही मनुष्य को दिया है वह हे बुद्धिदान । मनुष्य के परम कल्याण हेतु परमात्माने मनुष्य को अच्छे बुरे के विवेक को समझ सके उस हेतु से मनुष्य के हित के लिए ऐसा बुद्धिदान किया है। मनुष्य अपने जीव मात्र के कल्याण हेतु इस बुद्धि का उपयोग करके अपने जीवन को और जीव को सुधार सकता है क्योंकि ८४ लाख योनि में जनममरण के चक्र से मुक्ति का साधन मनुष्य इसी बुद्धि के यो गसे खोज सकता ता । मनुष्य को अपने जीवन सर्जनहार परमात्मा की आज्ञा के अनुसार व्यतीत करना चाहिए । इस प्रकार जीवन व्यतीत करने से चिंतामणी तुल्य मनुष्यदेह को सार्थक किया जा सकता है। पूर्ण पुरुषोत्तम श्री स्वामिनारायण भगवान के श्रेष्ठ सृजन समान मनुष्य में से किसी भी मनुष्य का आवाज या मुखारविंद एक समान नहीं होता है । इसी बात से अनुमान लगाया जा सकता है कि भगवान के पास आवाज देने की कितनी कुशलता होगी की हर मानव का भिन्न आवाज और भिन्न-भिन्न मुखारविंद है। पृथ्वी की उत्पत्ति को लाखो साल हो गये है। फिर भी किसी एक मनुष्य का मुखारविंद दूसरे मनुष्य के मुखारविंद से आज तक नहीं मिल पाया । परमात्मा के पास ही इस प्रकार की जोड सर्जन शक्ति है। प्रत्येक सृजनहार कि ऐसी इच्छा होती है कि मेरा सृजन मेरी आज्ञा में ही रहे। आज माता-पिता की इच्छा तो यह ही होती है कि मेरा पुत्र या पुत्री हो वह मेरी आज्ञा में ही रहे। उसमें शायद थोडा स्वार्थ अवश्य हो सकता है। परंतु परमात्मा का सृजन मनुष्य है परंतु परमात्मा का उसमें कोई स्वार्थ नहीं है। परमात्मा ने अपनी आज्ञा को धर्मशास्त्र शिक्षापत्री में स्पष्टरुप से कही है। यह आज्ञा दो प्रकार की है। (१) निषेधात्मक आज्ञा (२) विधेयात्मक आज्ञा।

प्रथम निषेधात्मक आज्ञा यानी नकारात्मक आज्ञा । इन आज्ञाओमें परमात्माने क्या नही करना चाहिए इसका उल्लेख किया है। दृष्टांत स्वरुप चोरी नही करनी चाहिए। व्यभिचार नहीं करना चाहिए, मदिरा या मांस का खान-

पान नहीं करना चाहिए। हिंसा और जूठ का प्रयोग नहीं करना चाहिए। क्रोधनहीं करना चाहिए। मान-अभिमान नहीं रखना चाहिए । स्वार्थ और अनीति से परे रहना चाहिए। बाहर का खान-पान नहीं करना चाहिए। किसी भी निंदा या स्वयं प्रशंसा से दूरी रखनी चाहिए। किसी भी देव-देवी का अपमान नहीं करना चाहिए। जहाँ-तहाँ थूंकना नहीं चाहिए। मलमूत्र का त्याग किसी भी स्थान पर कहीं भी नहीं करना चाहिए। यात्रा के समय पराया अन्न नहीं खाना चाहिए। देव-मंदिर में दर्शन के समय या आचार्य-गुरु के दर्शन के समय खाली हाथ नहीं जाना चाहिए । किसी का अपमान नहीं करना चाहिए। सभा प्रसंग में या बड़े बुजुर्गो के सामने उच्च आसन पर नहीं बैठना चाहिए । कभी भी असत्य या अपशब्द नहीं बोलना चाहिए । कुसंगी का संग नहीं रखना चाहिए। किसी का भी द्रोह नहीं करना चाहिए। इन आज्ञाओं का पालन अर्थात् ऐसा कुछ भी नहीं करना चाहिए तो ही परमात्मा हम पर प्रसन्न होगे, इन आज्ञाओं को न मानना पाप समान है। जिसके कारण कर्मबंधन होता है। और परमात्मा भी नाराज हो जाते हैं। इन आज्ञाओं के पालन से ही परमात्मा प्रसन्न होतें हे। इस तरह का कर्म पुण्य कर्म से कहलाता है। और कर्म बंधन भी नहीं होता।

परमात्मा की दूसरी विधेयात्मक आज्ञाओं में परमात्मा ने निम्न आज्ञाएं की है। शिक्षापत्री शास्त्र में कहा गया है कि, सूर्योदय से पूर्व उठना चाहिए। नित्य पूजा करनी चाहिए । बुर्जुगो और मा-बाप की सेवा करनी चाहिए । अपनी जिम्मेदारी तथा फर्ज का निःस्वार्थ रुप से पालन करना चाहिए । सायंकाल में भगवान के दर्शन करना तथा उच्च स्वर में कीर्तन गान करना चाहिए। अतिथि का आदर सत्कार करना चाहिए। गुरु तथा रोगियों की यथा शक्ति सेवा करनी चाहिए । आवक-जावक का हिसाब रखना चाहिए। भगवान की कथा-वार्ता का नित्यपान करना चाहिए। सत्पुरुषों का समागम करना चाहिए । धर्म भक्ति-त्याग-सेवा-पारायण नित्य करना चाहिए। सभी के साथ विवेक मर्यादा के साथ वाणी-व्यवहार रकना चाहिए। अपनी आय में से परमात्मा को दशांश-विशांश धर्मादा अवश्य देना चाहिए । देव-मंदिर सेवा करनी चाहिए । अपने परिवार का तथा पोष्य वर्ग तथा आश्रितजनों का रक्षण तथा पोषण करना चाहिए । समाज सेवा, वतन सेवा तथा देश सेवा करनी चाहिए। अपने परिवार का तथा पोष्य वर्ग तथा आश्रितजनों का रक्षण तथा पोषण करना चाहिए। एकादशी, जन्माष्टमी आदि व्रत-उद्यापन सामर्थ्य अनुसार शास्त्र अनुसार करना चाहिए। विष्णु-शिव, गणपति, पार्वती, सूर्य इन पांच देवों को पूज्य मानना। सावन महीने में श्री महादेवजी का पूजन बिल्व पत्र आदिक से करना चाहिए। अनेक प्रकार की छोटी-बड़ी विधेयात्मक आज्ञाए है। इन आज्ञाओं के पालन से परमात्मा प्रसन्न होतें है। इसी प्रकार जीवात्मा का परम कल्याण भी सरलता से हो सकता है। इन आज्ञाओं के पालन से पुण्य पर्व की प्राप्ति होती है। जो इन आज्ञाओं का पालन न किया जाय तो दोष युक्त पाप कर्म करवाता है।

परमात्मा की दोनों प्रकार की आज्ञाओं में से मनुष्य की शुद्धि हेतु विधेयात्मक आज्ञा है । बृद्धि हेतु विधेयात्मक आज्ञा है । भगवान श्री स्वामिनारायणने सर्व जीव हितावह "शिक्षापत्री" नामक छोटी सी धर्म शास्त्र की पुस्तिका लिखी है।" उसमें प्रथम निषेधात्मक आज्ञाओं का उल्लेखन है । उसके बाद विधेयात्मक आज्ञाओं का उल्लेख है । जब कोई बीमार होता है तो डोक्टर के पास दवा-निदान हेतु जाता है, डोकटर जांच करके दवाई-इंजेक्शन देता है। साथ कहता है कि चिंता

नहीं करना बस तेल-घी आहार नहीं लेना । भारी आहार ग्रहण नहीं करना । इस प्रकार के निषेधात्मक सूचन देता है । उसके विधेयात्मक सूचन हैं । जैसे नियमित दवाई लेना । आराम करना, हलका खोराक लेना । निषेधात्मक तथा विधेयात्मक आज्ञाओं का पालन अत्यंत आवश्यक है । जिससे सुख मिलता है और दुःख दूर होता है । परमात्मा के विधि-निषेधकी तमाम आज्ञा पालन में सुख की प्राप्ति होती है । उसके उल्लंघन से दुःख मिलता है । यदि मनुष्य को सुख चाहिए और उसे कायम रखना हो और दुःख से दूर रहना हो तो तन-मन-धन-कर्म-वचन मे अखंड परमात्मा श्री स्वामिनारायण भगवान ती तमाम प्रकार की आज्ञाओं का पालन करना चाहिए । सद्गुरु निष्कुलानंद स्वामीने ''वचनविधि'' ग्रंथमें कहा है कि,

"सो वातनी एक वात छे नव करवो आज्ञालोप,
राजी करवानुं रघु स्वरुंपण, करावीये नही हरिने कोय ॥"

जो भगवान को प्रसन्न करना होतो आज्ञा का लोप नही करना चाहिए । श्रीजी महाराज की आज्ञा का सदैव अनुसंधान रखना चाहिए । अस्तु ।

वचनामृत (२७३) की पेन ड्राईव प्राप्त कर लेना

समस्त हरिभ्कतों को सहर्ष ज्ञापित किया जाता है कि प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से कालुपुर मंदिर द्वारा रेकोर्डिंग वचनामृत (२७३) ग्रन्थ की मुखवाणी सनने के लिये पेन ड्राईव वसाइये ।

साहित्य केन्द्र

श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अमदावाद

श्री स्वामिनारायण पत्रिका प्रकाशन की मालिकी के सन्दर्भ में ।

१.	प्रकाशन स्थल	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदावाद-१
२.	प्रकाशन समय	:	प्रति मास
३.	मुद्रक का नाम	:	महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी
	राष्ट्रियता	:	हिन्दी
	पता	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदावाद-१
४.	संपादक का नाम	:	महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी
	राष्ट्रियता	:	हिन्दी
	पता	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदावाद-१
५.	मालिक	:	श्री नरनारायणदेव की गादी के अधिपति प. पू. ध. धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
	राष्ट्रियता	:	हिन्दी
	पता	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदावाद-१

मै शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी यह स्पष्ट कर रहा हूं कि ऊपर दी गई बातें मेरी जानकारी और समझ के अनुसार सत्य हैं ।

हस्ताक्षर : शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी, महंत स्वामी
श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर,
अहमदावाद-१, (प्रकाशक की साईन)

सत्संग समाचार

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री नरनारायणदेव प्रसादी के चोखट को सुवर्ण से मढा गया

परमकृपालु इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवानने पूरे विश्व में प्रथम अहमदाबाद कालुपुर में स.गु. आनंदानंद स्वामी से महा मंदिर का भव्य निर्माण करवाकर उसमें संवत १८७८ के फाल्गुन शुक्लपक्ष-३ तृतीया को स्वयं अपने हाथों से श्री नरनारायणदेव की स्थापना करके मंदिर की चौखट पर खडा होकर सभी आश्रितगणों को उपदेश दिया ता । नरनारायणदेव और हममें स्वरुप में रतिभर भी फर्क नहीं है । हम दोनो एक ही है . और इस देव के जो नित्य दर्शन पूजन पूनम-दिपावली तथा पाटोत्सव के दिन केरगा उनके सभी मनोरथ संकल्प श्री नरनारायणदेव अवश्य पूर्ण करेंगे । ऐसी चोखट के सुवर्ण स्वरुप मढवाने का कार्य प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा पू. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, शा.स्वा. पुरुषोत्तमदासजी (गांधीनगर) तथा शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) की प्रेरणा से पूर्ण किया गया । ता. १-३-१६ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से हजारो संत-हरिभक्तों की उपस्थिति में दर्शनहेतु खोला गया । (शा.स्वा. नारायणमुनिदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर घाटलोडिया शाकोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर घाटलोडिया में परमकृपालु श्री घनश्याम महाराज के शुभ सानिध्य में धनुर्मास में प्रात: श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून में हजारो हरिभक्त पधारते थे । बापूनगर एप्रोच मंदिर के शा. हरिकृष्ण स्वामी तथा कलोल से प्रेमस्वरुप स्वामी सत्यसंकल्प स्वामी, सुव्रत स्वामी, चैतन्य स्वामी, दिव्यप्रकाश स्वामी, शा. कुंजविहारी स्वामी इत्यादि संतोने कथा वार्ता का सुंदर लाभ दिया था । ता. २३-४१-१६ को प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों से भव्य शाकोत्सव संपन्न किया गया था । जिसके मुख्य यजमान प.भ. धर्मेन्द्रभाई कानजीभाई पटेल परिवार था । (युवक मंडल के सदस्य) सम्पूर्ण आयोजन श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा संपन्न किया गया था । सभी हरिभक्त छोटीबडी सेवा किये थे ।

(चेतन जे. पटेल - श्री न.ना. देव युवक मंडल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मणीयोर दशम वार्षिक पाटोत्सव तथा शाकोत्सव संपन्न

परमकृपालु श्री स्वामिनारायण भगवान तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की प्रसन्नता से तथा स.गु. शा.स्वा. जगदीशप्रसाददासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर मणीयोर का दशम वार्षिक पाटोत्सव ता. ११-१-१६ को विधिपूर्वक संपन्न हुआ था । जिस के यजमान प.भ. मोहनभाई कोदरभाई पटेल, डायाभाई कोदरभाई पटेल तथा चिंतनभाई डी. पटेल थे । इस प्रसंग पर गांधीनगर से संप्रदाय के सुप्रसिद्ध विद्वान पू. शा.स्वा. हरिकेशवदासजी तथा सोकली से पू. रघुवीरचरणदासजी स्वामीने प्रेरणात्मक आशीर्वाद दिया था । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से ठाकुरजी की आरती तथा शाकोत्सव का कार्य विधिवत धूमधाम से किया गया था । बाद में सभी सभाजनों को प.पू. आचार्य महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद दिया था । ईडर देश के पुरावास, उमेदगढ, रतनपर, नेत्रामणी इत्यादि गाँवो में शाकोत्सव धूमधाम से मनाया गया था । जिस में कोठारी सत्यसंकल्प स्वामी, अजय स्वामी, श्रीजी स्वामी, माधव स्वामी इत्यादि संतोने कथावार्ता करके भगवान की महिमा समझाई थी ।

(को. सत्यसंकल्प स्वामी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा का २२ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा

धर्मकुल की प्रसन्नता से श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणपुरा में विराजमान बाल स्वरुप घनश्याम महाराज का २२ वाँ वार्षिक पाटोत्व माघ शुक्ल-१० के शुभ दिन धूमधाम से मनाया गया।

इस प्रसंग पर जय सद्गुरु की आरती के ऊपर शा.स्वा. हरिॐस्वामीने गूढार्थ रहस्य समझाया था।

पाटोत्सव के यजमान प.भ. अंबालाल वालदास पटेल (विहार) परिवार था। कथा के यजमान प.भ. मावजीभाई वालजीभाई (लीलापुर) थे। अनेक धामों से संत पधारकर देव तथा धर्म की महिमा का निरुपण किया था। प्रातः ७-०० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से प्रत्येक फलोके रस से तथा पंचामृत से मिश्रित करके वेदोक्त विधिसे षोडशोपचार के साथ महाभिषेक किया गया था।

अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने खूब प्रसन्न होकर आनन्दमयी शैली में प्रेरणारुप आशीर्वाद दिया था। पू. माधव स्वामी के मार्गदर्शन में पुजारी श्रीजी स्वामी तथा संत पार्षद मंडलने प्रेरणारुप सेवा की थी। नारायणपुरा के हरिभक्त दर्शन करके धन्यता का अनुभव कर रहे थे। (मयूर भगत)

श्री प्रभा हनुमानजी मंदिर जमीयतपुरा पाटोत्सव संपन्न

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से स.गु. स्वामी जगतप्रकाशदासजी तथा स.गु. महंत शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री प्रभु हनुमानजी महाराज जमीयतपुरा के वार्षिक पाटोत्सव के उपलक्ष में ता. १९-१-१६ से ता. २३-१-१६ तक स.गु. शा.स्वा. चंद्रप्रकाशदासजी (सिध्धपुर महंतश्री) के वक्तापद पर श्रीमद् सत्संगिभूषण पंचान्ह पारायण का आयोजन किया गया।

इस प्रसंग में बहनोकी गुरु प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री तथा अ.सौ. प.पू. बड़ी गादीवालाश्री बहनो को दर्शन-आशीर्वाद देने पधारी थी।

अयोध्या मंदिर के महंत स्वामी देवप्रसाददासजी, विष्णु स्वामी आदि जेतलपुर तथा अहमदाबाद के भी संतगण पधारे थे।

पूर्णाहुति के समय पर प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे। ठाकुरजी तथा श्री हनुमानजी की अन्नकूट आरती उतारकर शाकोत्सव का बघार किया था। सभा में सभी संतो-हरिभक्तो को आशीर्वाद दिये। पारायण के यजमान अ.नि. पुरुषोत्तमभाई बाबुभाई पटेल का परिवार, उवारसद पाटोत्सव के यजमान नरेशभाई अमृतभाई पटेल परिवार, गं.स्व. साकरबहन भगवानदास पटेल झुंडाल आदि यजमान परिवार था। सभा संचालन प.भ. घनश्यामभाई पटेल (उवारसदवाले)ने किया। श्री नरनारायणदेव युवक मंडल तथा जमीयतपुरा गाँव के बहनो की सेवा प्रेरणारुप थी। (महंत स्वा. विजयप्रकाशदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नांदोल पाटोत्सव

परमकृपालु श्री स्वामिनारायण भगवान तथा उनके अपर स्वरुप प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा एप्रोच मंदिर के महंत स्वामी लक्ष्मणजीवनदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर का ११ वाँ पाटोत्सव धूमधाम से

बापूनगर एप्रोच श्री स्वामिनारायण मंदिर मे बिराजमान बालस्वरुप श्री घनस्याम महाराज का वार्षिक पाटोत्सव तथा नूतन मुख्य प्रवेश द्वार का उद्घाटन

ता. १२-३-२०१६ से ता. १६-३-२०१६ स.गु. निष्कुलानंद स्वामी रचित ''श्रीहरिबलगीता'' ग्रंथ पंचान्ह पारायण इत्यादि प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ सानिध्य में धूमधाम से मनाया गया था।

महंत स्वामी लक्ष्मणजीवनदासजगुरु स.गु. शा.स्वा. निर्गुणदासजी।
श्री स्वामिनारायण मंदिर, एप्रोच-बापूनगर।

मनाया गया।

सुबह महापूजा कई हरिभक्तोने लाभ लिया। उसके बाद टाकुरजी के अभिषेक तथा अन्नकूट आरती में यजमान परिवारने लाभ लिया था।

स.गु.शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी (एप्रोच बापुनगर) ने कथावार्ता का सुंदर लाभ दिया।

(कोठारी पटेल विष्णुभाई - नांदोल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कुंडाल

कला भगत के पवित्र कुंडाल गाँव में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण म्युजियम का पांचवा वार्षिक पाटोत्सव तथा बापुनगर मंदिर के ११ वें पाटोत्सव के उपलक्ष में तथा ता. १०-२-१६ की रात में शा. हरिकृष्णदासजी, भक्तिकिशोर स्वामी तथा धर्मकिशोर स्वामी आदि संतमंडलने कथावार्ता का सुंदर लाभ दिया। (कोठारी अंबालाल पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर लसुन्द्रा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. ७-२-१६ को बापुनगर मंदिर के १२ वे पाटोत्सव के उपलक्ष में संतोने कथावार्ता की। जिस में महापुरुष स्वामी तथा धर्मकिशोर स्वामी आदि संतमंडलने सुंदर लाभ दिया। (मंगलेश पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कुबडथल

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर कुबडथल में बापुनगर मंदिर के ११ वे पाटोत्सव के उपल७ में भव्य सत्संग सबा का आयोजन किया गया। जिस में महंत स्वा. लक्ष्मणजीवनदासजी, स्वामी हरिकृष्णदासजी आदि संतोने कथावार्ता करके भगवान का सर्वोपरि महिमागान किया। (सागर पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कुंजाड

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से एप्रोच-बापुनगर मंदिर के ११ वे पाटोत्सव के उपलक्ष में कुंजाड में ता. ४-२-१६ के एकादशी को बापुनगर एप्रोच मंदिर शा. हरिकृष्ण स्वामीने कथावार्ता करके सभी भक्तोंको प्रसन्न किया।(पटेल मुकेशभाई)

श्री स्वामिनारायण मंदिर सांकापुर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से मंदिर के पाटोत्सव के उपलक्ष में ता. १३-२-१६ को सत्संग सभा का आयोजन किया गाय। जिस में शा. हरिकृष्ण स्वामी, धर्मकिशोर स्वामीने कथावार्ता का लाभ हरिभक्तो को दिया ता. १४-२-१६ को सुबह हरिकृष्ण महाराज का अभिषेक करके अन्नकूट का भोग लगाया गया। सभी हरिभक्तोने दर्शन करके प्रसाद ग्रहण किया।

(अंबालाल रामाभाई कोठारी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर विरमगाँव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर विरमगाँव में ता. १४-२-१६ की साम को भव्य शाकोत्सव मनाया गया। इस प्रसंग पर बापुनगर के महंत स्वामी लक्ष्मणजीवनदासजी, शा. हरिकृष्ण स्वामी आदि संतोने कथा वार्ता करके शाकोत्सव का माहात्म्य कहा। (उपेन्द्रभाई सोनी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बालासिनोर वसंत पंचमी

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स्वामी नारायणजीवनदासजी (वारावाले) की प्रेरणा से बालासिनोर श्री स्वामिनारायण मंदिर में वसंत पंचमी महोत्सव धूमधाम से मनाया गया।

ठाकुरजी का महामूला-अभिषेक विधिपूर्वक किया गया। जिस में यजमान परिवारने लाभ लिया। शा.स्वा. छपैयाप्रसाददासजी के वक्तापद पर श्रीमद् शिक्षापत्री का पाठ किया गया। यजमानकी तरफ से ब्रह्म चोर्यासी का पाठ किया गया। गाँव में ठाकुरजी की शोभायात्रा निकाली गयी। समग्र हरिभक्तोने श्रीमद् शिक्षापत्री का श्रवण दर्शन करके प्रसाद ग्रहण किया।

(कोठारीश्रीवती हार्दिक भगत)

श्री स्वामिनारायण मंदिर सरसपुर वार्षिक पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. स्वामी नारायणजीवनदासजी की प्रेरणा से सरसपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के हाथों से ठाकुरजी के पाटोत्सव के उपलक्ष में अन्नकूट आरती की गयी । यजमान परिवार द्वारा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन आरती की गयी । अहमदाबाद मंदिर से संतो के साथ महाराजश्री पधारे थे ।समस्त सभा को आचार्य महाराजश्रीने दिव्य आशीर्वाद दिये। (कोठारीश्री हार्दिक भगत

श्री स्वामिनारायण मंदिर करजीसम १३ वाँ पाटोत्सव मनाया गया

श्री नरनारायणधेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से महामुक्तराज गोविंदजीभाई के करजीसण में स्वामिनारायण मंदिर का १३ वाँ पाटोत्सव प.भ. गोविंदभाई के वंशज प.भ. नटवरभाई भगवानदास पटेल के परिवार की तरफ से ता. ६-१-१६ से ता. ११-१-१६ को मनाया गया । इस प्रसंग के उपलक्ष में पंच दिनात्मक श्रीमद् भागवत पारायण स.गु. महंत शा.स्वा. हरिॐप्रकाशदासजी (नारणपुरा मंदिर महंतश्री) तथा स.गु. शा.स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजी (हाथीजण गुरुकुल) के वक्तापद पर सम्पन्न हुई ।

कथा प्रारंभ में प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाश्रीने पधारकर यजमान परिवार तथा गाँव की सत्संगी बहनो को आशीर्वाद दिये ।

दूसरे दिन प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री के अध्यक्ष स्थान पर महिला शिबिर का धूमधाम से आयोजन किया गया । जिस में विशाल संख्या में साध्ययोगी बहने पधारी थी । समग्र शिबिरार्थी बहनो को प.पू. गादीवालाश्रीने आशीर्वाद दिये ।

तीसरे दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने ठाकुरजी के दर्शन-पूजन करके सभी भक्तों तथा यजमान परिवार को आशीर्वाद दिये ।

संतोने पधारकर अपनी प्रेरकवाणी से धर्मवंशी माहात्म्य को समझाया । दोनो समय मेहमान को सुबह-साम प्रसाद दिया गया । करजीसण मंदिर के कोठारी, कारोबारी सभ्यगण छोट-बड़े सभी तरह के भक्तगणो की नरनारायणदेव युवक मंडल तथा महिला मंडलने अद्‌भुत सेवा की । २०० जितने संत-पार्षदो की सेवा प.भ. त्रिकमभाई भगत के परिवारने की ।

इस प्रसंग में अनेक धार्मिक-राजकीय महानुभव जैसे नितीनभाई पटेल (मंत्रीश्री), श्री परेशभाई पटेल (कुंडालवाले) आदि विशेष रुप से उपस्थित थे । वडनगर के महंत स.गु. शा.स्वा. हरिॐप्रकादासजी ने संतो-हरिभक्तो को सेवा के लिए श्रीहरि का आशीर्वाद दिया । अमेरिका से यजमान परिवार के रिस्तेदारोने प्रसंग में पधारकर प्रसंग का लाभ लिया ।

अंतिम दिन पर गाँव के लोगोने प्रसाद ग्रहण किया। (श्रीजी स्वामी पुजारी)

झुलासण श्री स्वामिनारायण मंदिर में ३०० वी रवि सवा मनायी गयी

सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा जेतलपुर मंदिर के संत मंडल के मार्गदर्शन से झुलासण श्री स्वामिनारायण मंदिर में आरंभ की हुई रविवार की अखंड साप्ताहिक रवि सभा की ३०० वी जयंती का उत्सव ता. १४-२-१६ को धूमधाम से मनाया गया । इस प्रसंग पर हरिभक्तो द्वारा ११००० मंत्रलेखन, वचनामृत पाठ, दंडवत, प्रदक्षिणा, जपमाला, भजन-कीर्तन, धून आदि कार्यक्रम किया गया । समस्त हरिभक्तोने प्रसंग को धूमधाम से मनाया ।

(श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, झुलासण)

श्री स्वामिनारायण मंदिर अंजली का नौवा वार्षिक पाटोत्सव मनाया

भगवान स्वामिनारायण महाप्रभु की असीम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा जेतलपुर मंदिर के महंत स्वामी पूज्य शा.स्वा. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर अंजली (अहमदावाद) का ९ वाँ वार्षिक

पाटोत्सव ता. १५-२-१६ से २१-२-१६ तक धूमधाम से मनाया गया । पाटोत्सव के अंतर्गत श्रीमद् सत्संगिभूषण सप्ताह पारायण शा.स्वामी भक्तिनंदनदासजीने कथा पारायण की । संहितापाठी वक्ता विष्णु स्वामी (कालुपुर) थे ।

कथा का यजमानश्री स्वामिनारायण मंदिर अंजली समस्त महिला मंडल था । कथा अंतर्गत भिन्न-भिन्न उत्सव मनाये गये । ता. १०-२-१६ को प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री ने पधारकर बहनो को दर्शन आशीर्वाद दिये । ता. २१-२-१६ को सुबह पाटोत्सव के मुख्य यजमान प.भ. बलवंतभाई मिराणी परिवार द्वारा ठाकुरजी का षोडशोपचार पूजन अर्चन किया गया । प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा भावि आचार्य लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से श्री नरनारायणधेव तथा श्री राधाकृष्णदेव, श्री घनश्याम महाराज का महाभिषेक किया गया । उसके बाद शिंगार आरती, अन्नकूट आरती, की गयी । कथा की पूर्णाहुति पर प.पू. लालजी महाराजश्री के हाथों से की गयी । सभा में पू. लालजी महाराजश्रीने सभा को आशीर्वाद दिये । यजमानश्री का भी सन्मान किया गया ।

सभा में आगामी दशाब्दी महोत्सव की धोषणा की गयी । इस प्रसंग में यहाँ के महिला मंडल, कांकरिया युवक मंडल तथा राणीप के भाई बहनो की सेवा प्रेरणारुप थी ।

समग्र आयोजन में जेतलपुर के महंत श्री के.पी. स्वामी, अंजली मंदिर के महंत वी.पी. स्वामी, मूली से भानु स्वामी, प्रेम स्वामी तथा परमेश्वर स्वामी आदि संत-मंडल प्रेरणारुप थे । (महंत वी.पी. स्वामी - अंजली)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली मंदिर का उत्सव धूमधाम से मनाया गया

श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली धाम श्रीराधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का १९३ वाँ पाटोत्सव माधशुक्ल-५ वसंत पंचमी के शुभ दिन को प.पू.ध.धु. आचार्य महराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री तथा प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री के सानिध्य में धूमधाम से मनाया गया ।

मूली मंदिर के स.गु. महंत स्वामी श्यामसुंदरदासजी की प्रेरणा से सुखपर (कच्छ) के प.भ. रामजीभाई विश्राम गोरसीया परिवार द्वारा श्रीमद् सत्संगीजीवन कथा पारायण पुराणी स्वामी घनश्यामप्रकाशदासजी के वक्तापद पर तथा संहिता पाठ में स.गु. पुराणी स्वामी बालस्वरुपदासजी ने किया । कथा पारायण, महाभिषेक, श्री हरियाग, अन्नकूट, ब्लड डोनेशन केम्प, रात्रीय सांस्कृतिक कार्यक्रम किये गये ।

अहमदाबाद से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का षोडशोपचार महाभिषेक प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से किया गया । प.पू. महाराजश्रीने यजमानो का सन्मान किया । प.पू. लालजी महाराजश्रीने सभी को आशीर्वाद दिये । संतो महंतो तथा हजारो हरिभक्तोने पाटोत्सव का लाभ लिया । श्रीहरि के दोनो अपर स्वरुपोने सभी भक्तों पर गुलाबी रंग फेंक कर उत्सव मनाया । सभा संचालन शैलेन्द्रसिंह झाला तथा भरत भगतने किया ।

रसोई की व्यवस्था में कोठारी स्वामी कृष्णवल्लभदासजी के मार्गदर्शन से व्रत स्वामी, हरिकृष्ण स्वामी, गोपाल स्वामी, शा. सूर्यप्रकाशदासजी तथा ज्ञान स्वामीने की । (शेलेन्द्रसिंह झाला)

श्री स्वामिनारायण मंदिर लीलापुर बहनोका मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से मूली के लखतर तालुका के श्रीहरि के प्रसादीभूत लीलापुर के बहनो के मंदिर का जीर्णोध्धार मूली मंदिर के अ.नि. प्रभुचरण स्वामी तथा स.गु. महंत स्वामी प्रेमजीवनदासजी (सुरेन्द्रनगर) की प्रेरणा से हरिभक्तों के साथ-सहयोग से किया गया ।

जिसका मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव ता. ३०-१-१६ से ३-२-१६ को मनाया गया । जिसके उपलक्ष में श्रीमद् भागवत् पंचान्ह पारायण स.गु. शा.स्वा.

श्रीजीप्रकाशदासजी (हाथीजण गुरुकुल)ने की । संहिता पाठ वक्ता पूजारी स्वामी नित्यप्रकाशदासजी तथा बालस्वरुप स्वामीने किया।

ता. ३-२-१६ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ हाथों से ठाकुरजी की प्राण प्रतिष्ठा, श्रीहरिकृष्ण महाराज का षोडशोपचार महाभिषेक वेदोक्त विधिसे पूर्ण किया गया । अन्नकूट आरती तथा श्रीहरियाग आरती की गयी । यजमानो का सन्मान किया गया । बहनो को दर्शन-आशीर्वाद देने हेतु प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री की विशेषरुप से पधारी थी । समग्र आयोजन कोठारी स्वामी कृष्णवल्लभदासजी के मार्गदर्शन से दिया गया।

सभा संचालन पूजारी स्वामी त्यागवल्लभदासजीने किया। रसोई की सेवा घनश्याम स्वामी तथा सेवावत्सल स्वामीने की। (शैलेन्द्रसिंह झाला)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर पारसमीपनी

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से छपैयाधाम श्री स्वामिनारायण मंदिर पारसीपनी में उत्तरायण के पर्व पर जोली मांगने का कार्यक्रम किया गया था, इस अवसर पर महंत स्वामी के मार्गदर्शन के अनुसार उत्सव धूमधाम से मनाया गया था । स्वामीजी कथाकरने के बाद झोली मांगने के लिये निकल गये थे । प्रेसि. श्री मेरडियाने आगामी सभी उत्सोवं जानकारी दीथी । सभी हरिभक्त ठाकुरजी के समक्ष धून-कीर्तन तता नित्यनियम करके साथ में प्रसाद लिये थे। (प्रवीण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन में शाकोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की कृपा से तथा यहाँ के मंदिर के महंत स्वामी भक्तिप्रसाददासजी तता नीलकंठ स्वामी के मार्गदर्शन में सभी हरिभक्तों ने साथ मिलकर ३१ जनवरी को भव्य शाकोत्सव मनाया था। संतोने शाकोत्सव की लीला को कथा के रुप में वर्णन किया था। प्रेसि. श्री गोविन्दभाई पटेल द्वारा आज के प्रसंग का १० यजमानोने लाभ लेकर उनकी सेवा की प्रसंसा की थी। समूह जनमंगल पाठ, पूजन, थाल, आरती इत्यादि के बाद हनुमान चालीसा का पाठ किया गया था । सभी हरिभक्त अलौकिक दर्शन करके प्रसाद लेकर धन्यता का अनुभव किये थे। (प्रवीणभाई शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर एटलान्टा शाकोत्सव - वसंत पंचमी

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से एवं यहाँ के महंत स्वामी के मार्गदर्शन से ता. १३-२-१६ को हरिभक्तों की विशाल उपस्थिति में वसंत पंचमी तथा शाकोत्सव धूमधाम से मनाया गया था।

स्वामीने उत्सव की रसमाधुरी का वर्णन किया था। ठाकुरजी के समक्ष अलौकिक शाग का वघार किया गया था, इसके साथ ही महाराज के समय से आज तक इस उत्सव के मनाने का रहस्य भी बताया गया था। वसंत पंचमी को शिक्षापत्री का पूजन करके शिक्षापत्री जयंती का उत्सव मनाया गया था, सभीने इस दिव्यता को अपनी आंखो से दर्शन करके सुख का अनुभव किया।

संतो ने शिक्षापत्री का माहात्म्य समझाया था । हरिभक्तों की सुंदर सेवा की प्रशंसा की थी। बहुत सारे हरिभक्त सेवा का लाभ लिये थे। सायंकाल ७-०० बजे समूह में आरती की गई थी। रोटी-शाग बनाने की सेवा राजूभाई शैलेषभाई तथा उनके परिवार के लोगो ने की थी। सभी हरिभक्त दर्शन का तथा प्रसाद का लाभ लेकर प्रसन्नता का अनुभव किये थे।

(एटलान्टा सत्संग समाज)

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

(१) आई.एस.एस.ओ. के सीनेमीन्सन मंदिर में शाकोत्सव के प्रसंग में उपस्थित हरिभक्तगण । (२) डीट्रोईट मंदिर में हनुमानजी चरित्र की कथा प्रसंग पर भिन्न-भिन्न वेशभूषा में सत्संग बालकगण । (३) एटलान्टा मंदिर में शाकोत्सव दर्शन । (४) श्री स्वामिनारायण म्युजियम में रोनकभाई पटेल (एल.ए.) के पुत्र जन्म के संकल्प पूर्ण होने पर चांदी से तोलने की विधिके उपरान्त समस्त चांदी स्वामिनारायण म्युजियम में अर्पण की गई । (५) कांकरिया मंदिर में चौरासी के उपलक्ष में कांकरिया मंदिर से जेतलपुर तक की पदयात्रा में विशाल संख्या में संतो-हरिभक्तोने लाभ लिया । (६) श्री स्वामि नारायण मंदिर गांधीनगर से-२ में प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री की आज्ञा से श्री नरनारायणदेव महिला मंडल द्वारा आयोजित हरिबलगीता पारायण प्रसंग पर कथा श्रवण करती हुई महिलागण ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/15-17 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2017

स्वामिनारायण भगवानने सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव मंदिर मे सर्व प्रथम प्रतिष्ठा कार्य के बाद आश्रितों के जिस चौखट पर खड़े होकर "श्री नरनारायणदेव और हम एक ही है हमारे और उनमें कोई भेद नहीं है, और जो कोई भी इसदेव के दर्शन हेतु पधारेगा उसके सभी मनोरथ-संकल्प देव अवश्य पूर्ण करेंगे। ऐसे चौखट को सुवर्ण से मढ़ा गया है। जिसका उद्घाटन प.पू. आचार्य महाराजश्री द्वारा किया गया। जिस के यजमान श्री देवेन्द्रभाई नारणभाई पटेल (उनावावाले) का परिवार था। मा. श्री नरहरिभाई अमीन सहित श्री नरनारायणदेव की आरती उतारते तथा प्रासंगिक सभा में आशीर्वचन देते हुए प.पू. महाराजश्री तथा सभा को संबोधित करते हुए प.पू. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी।

अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव के समीप
प.पू.आचार्य महाराजश्री और प.पू.लालजी महाराजश्री द्वारा
फूलदोलोत्सव
फागुन सुद-३
दि:२३-३-२०१६
ब्रहस्पतिवार
आयोजक :- महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर